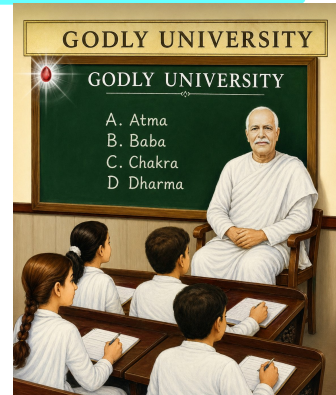




28-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन
 "मीठे बच्चे - बाबा कितनी दूर से तुम्हें पढ़ाने आते हैं,
 पढ़ाई की फीस भी नहीं लेते तो कितना प्यार से
 पढ़ना चाहिए"



प्रश्न:- रूहानी गवर्नमेंट ने सारी दुनिया के लिए यह
 फ्री स्कूल खोला है क्यों?



उत्तर:- क्योंकि सभी आरफन, निधनके बन गये हैं।
 बाप ऐसे गरीब बच्चों से फीस क्या लेंगे। इस अन्तिम
 जन्म में बाप ऐसी पढ़ाई पढ़ाते हैं जिससे तुम विश्व
 का मालिक बन जाते हो। जो नये-नये बच्चे पढ़ने के
 लिए आते हैं, उन्हें भी कोई घाटा नहीं होता। भल
 पिछाड़ी में आये हैं लेकिन थोड़ी मेहनत कर पुरानों
 से भी आगे जा सकते हैं।



गीत:- जाग सजनियाँ जाग...

[Click](#)

जाग सजनियाँ जाग नवयुग आया
 आया सजनिया जाग सजनिया जाग
 नवयुग आया आया सजनिया
 जाग सजनिया जाग

बीत गई बीत गई सब बात पुरानी बीत गई
 बीत गई बीत गई सब बात पुरानी
 नया ज़माना नयी कहानी
 नया ज़माना नयी कहानी
 नयी चदरिया नयी खबरिया सजनिया
 नयी चदरिया आ नयी खबरिया सजनिया
 नयी नयी नियति नयी नगरिया सजनिया
 नयी नयी नियति नयी नगरिया सजनिया
 नयी आशा नयी खिलौने
 एक नया संसार जगाया सजनिया
 एक नया संसार जगाया सजनिया

नवयुग आया आया सजनिया
 जाग सजनिया जाग
 नवयुग आया आया सजनिया
 जाग सजनिया जाग

Points: Golden = ज्ञान, Red = याग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा

28-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों ने गीत सुना।

रूहानी बाप ने कहा, यहाँ तुम बच्चों को आत्म-

अभिमानी हो बैठना होता है। परमपिता परमात्मा

और बच्चे अभी आकर मिले हैं। इसको कहा जाता

है आत्माओं और परमपिता परमात्मा का इस सृष्टि

पर मेला। यह मेला एक ही बार होता है। आधाकल्प

सतयुग त्रेता में कोई बुलाते ही नहीं। तुम बच्चे सुखी

रहते हो, जो सुख तुम आत्मायें अभी पा रही हो। तुम

पहले सतोप्रधान थे, अभी तमोप्रधान पतित बन पड़े

हो फिर बाप पावन बनाते हैं। जब पुजारी बनते हो

तो दुःखी होते हो। 5 विकारों के कारण ही दुःख

होता है। जितना-जितना सीढ़ी उतरते जाते हो उतना

दुःखी होते जाते हो। अभी तुम बच्चे जानते हो दुःख

के पहाड़ गिरने हैं। इस पुरानी दुनिया का अब

विनाश होना है। तुम्हारी बुद्धि जानती है - बाबा है

निराकार, वह टीचर बनकर हम शालिग्रामों को

पढ़ाते हैं। कहते हैं बच्चों, हम फिर से तुमको विश्व

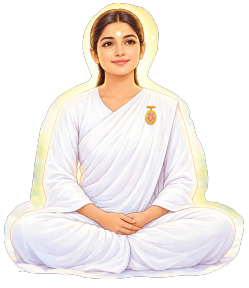
का मालिक बनाने आया हूँ। 5 हजार वर्ष पहले भी

तुम स्वर्ग के मालिक थे, याद है ना। संगम पर ही

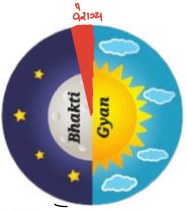
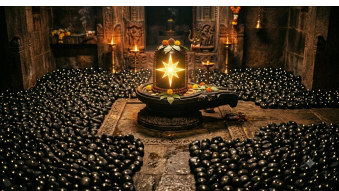
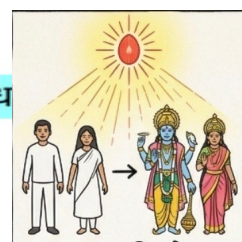
तुमको बनाया था। अभी फिर तुमको मनुष्य से

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = ध

सेवा



आत्मायें और परमात्मा का मेला



28-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

देवता, वैकुण्ठ स्वर्ग का मालिक बनाने आया हूँ।

तुमको यह वर्सा दिया था फिर तुमको 84 जन्म लेने

पड़े। अभी तुम्हारे 84 जन्म पूरे हुए हैं। अभी मैं

आया हूँ, फिर तुमको पहले नम्बर जन्म से शुरू

करना है। मैं तुम्हारा बाप तुमको पढ़ाता भी हूँ। अब

बाप पढ़ाने की फी बच्चों से लेगा? बच्चों से फी कैसे

लेंगे! एक पाई भी फी नहीं लेता हूँ। कितना दूर

परमधाम से आता हूँ तुमको पढ़ाने। यह नौकरी

करने रोज़ आता हूँ। कोई की नौकरी दूर कहाँ होती

है तो रोज़ आना-जाना होता है ना। तुम जानते हो

बाबा ज्ञान का सागर है, जो हमको सृष्टि के आदि

मध्य अन्त का ज्ञान देते हैं। भगवानुवाच - मैं

निराकार परमात्मा हूँ, न कि श्रीकृष्ण। तुम जिस

श्रीकृष्ण को भगवान समझते हो, वह भगवान हो न

सके। वह तो पूरे 84 जन्म लेते हैं। भगवान को

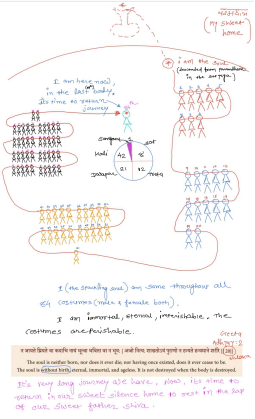
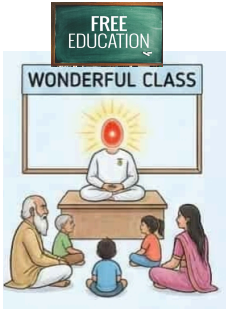
अपना शरीर नहीं है। जैसे तुम आत्मा हो वह भी

आत्मा है। परन्तु सिर्फ आत्मा कहने से तो सबके

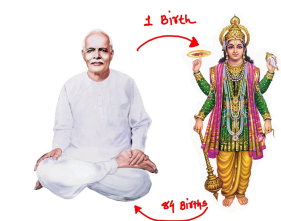
साथ मिल जायेंगे इसलिए मुझे परम आत्मा कहते

हैं। ड्रामा प्लैन अनुसार मुझ आत्मा का नाम शिव है।

मैं हूँ निराकार। मुझे बुलाते ही हैं शिवबाबा। असुल

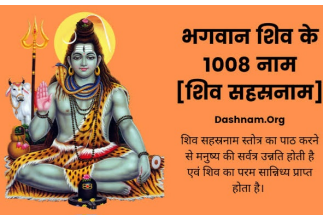


किन शब्दों में आपका धन्यवाद करें...
दिन रात की ये सेवा हम याद करें..



परम आत्मा

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा



^{Actually} मेरा नाम एक ही है। बाकी भिन्न-भिन्न नाम रख दिये हैं। मेरा नाम कोई रूद्र है नहीं। न श्रीकृष्ण ने कोई यज्ञ रचा है। यह सब है झूठ। मैं ही आकर तुमको

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...



सच बतलाता हूँ। तुमको सच-सच नर से नारायण बनाने मैं आया हूँ। मेरा घर बहुत दूर है। यहाँ आकर इस शरीर द्वारा तुमको पढ़ाता हूँ। सारा दिन इसमें बैठता नहीं हूँ। चक्र लगाता रहता हूँ। मेरी ग्लानी करने के कारण तुम बहुत दुःखी, महान पतित बन



गये हो। ब्रह्मा को भी कोई आदि देव कहते, कोई एडम कहते, कोई महावीर कहते, तुम प्रजापिता कहते हो। तुमने मुझे आधाकल्प याद किया है, इसलिए मुझे इस पराये देश में आना पड़ा है। सब पतित दुःखी हैं। आरफन्स हैं। धनी-धोरी है नहीं।



आरफन को पढ़ाने के लिए गवर्मेन्ट फी नहीं लेती है। यह तो बहुत बड़ी रूहानी गवर्मेन्ट है। बेहद के बाप को कोई जानते नहीं हैं। कितने जप-तप, दान-पुण्य



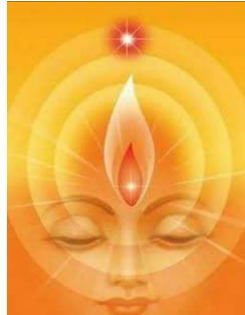
आदि करते हैं। पूछा जाता है यह क्यों करते हो? तो कहेंगे इससे भगवान के पास पहुँच जायेंगे। कोई जप-तप करने से पहुँचेगा, कोई शास्त्र पढ़ने से। बाप कहते हैं - ऐसे तो है नहीं। भक्ति करते-करते तो तुम और ही पतित बन गये हो। पंख टूट गये हैं। तुम उड़





28-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

नहीं सकते हो, जब तक तुम्हारे में ज्ञान-घृत न पड़े।
घृत अथवा पेट्रोल खत्म हो जाने से ज्योत बुझ गई है। फिर मैं आकर भरता हूँ।



तुम जानते हो - बाबा आया हुआ है। यहाँ तुम खुशी में रहते हो। घर में जाने से तुम भूल जाते हो। तुमसे मैं इस पढ़ाई की फी नहीं लेता हूँ। तुम कहेंगे यह चावल मुट्ठी देते हैं। यह चावल मुट्ठी तो तुम भक्ति मार्ग में देते आये हो, जिसका रिटर्न फिर दूसरे जन्म में मिलता है। अभी तो तुम जानते हो - बाप सम्मुख

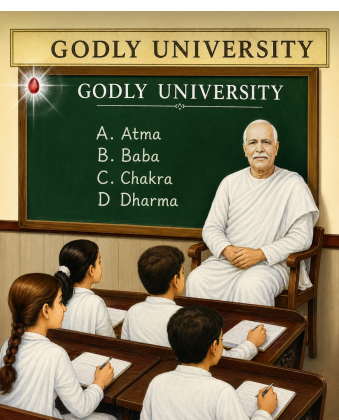
बैठे हैं, फ्री पढ़ाते हैं क्योंकि जानते हैं इन्हीं के पास रखा ही क्या है। तो बाप थोड़ेही तुमसे कुछ लेंगे। उस पढ़ाई में तो कितना खर्चा करना पड़ता है।

कितने इम्तहान पास करने पड़ते हैं। मैं तो एक ही पढ़ाई पढ़ाता हूँ। स्कूल में जो आते जाते हैं, उनको एड करता जाता हूँ। हाँ जो लेट आते हैं, उनको थोड़ी मेहनत जास्ती करनी पड़ती है। उनके बदले में फिर देरी से आने वालों को अच्छी प्वाइंट्स मिलती हैं।

जो जल्दी-जल्दी पढ़ते उनको कुछ घाटा नहीं है। नई



गरीब नवाज़
मेरा बाबा



For New commers

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा

28-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



-नई अच्छी प्वाइंट्स मिलने से पुरानों से भी तीखे जाते हैं। बाप कहते हैं शुरू में जो आये वह कितने भागन्ती हो गये। अच्छा हुआ जो तुम देरी से आये सो फिर तुमको गुह्य ते गुह्य प्वाइंट्स मिलती हैं। बाप कहते हैं जिस्मानी पढ़ाई भी पढ़ो। शरीर निर्वाह अर्थ धन्धा धोरी भल करो सिर्फ मुझे याद करो और चक्र को याद करो। यह भूलना नहीं चाहिए। यह तो समझते हो ना कि अब हमारे 84 जन्मों का अन्त है।



त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या ब्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥



बाप समझाते हैं मुझे याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। याद तो तुम बाप को भी करते हो, पति को भी करते हो। अब मैं तुम्हारा पतियों का पति, बापों का बाप हूँ, टीचर भी हूँ। मैं तुम्हारा सब कुछ हूँ। सुख देने वाला हूँ। वह पतित सम्बन्धी आदि तो तुमको दुःख ही देंगे। सतयुग में कोई किसको दुःख नहीं देते। अब मैं आया हूँ सतयुग का राज्य-भाग्य देने। तुम जानते हो इस संगम पर ही बाप से हम वर्सा लेते हैं। अब जितना तुम पढ़ेंगे। पढ़ाई भी बहुत सहज है। यह है ही सहज ज्ञान,

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा

28-10-2026 प्रातःमुरली



"बापदादा"



सहज याद। मौत भी सामने खड़ा है। मैं आया हूँ तुम

सबको ले जाने इसलिए मुझे कालों का काल भी

कहते हैं। यह भी कहते हैं कि इनको काल खा गया।

काल शरीर को खाता है, आत्मा को तो खा न सके।

आत्मा तो एक शरीर छोड़ दूसरा जाकर लेती है।

पार्ट बजाती है। अभी तुम जानते हो एक ही धक से

यह सब खलास हो जायेगा, मौत ऐसा होना है जो

कोई किसके लिए रोयेगा नहीं। सभी को वापिस

जाना ही है। रोते तब हैं जबकि पुनर्जन्म फिर फिर

दुःख की दुनिया में ही लेते हैं। तुम बाप को बुलाते

भी इसलिए ही हो कि बाबा हमको अपने साथ ले

जाओ। तो अब बाबा आया हुआ है, जो भी मनुष्य

मात्र हैं सबको ले जाते हैं। विनाश होगा तो सब

मरेंगे। रहेगा कोई नहीं। गवर्मेन्ट अपना प्लैन बना

रही है। मनुष्य सृष्टि तो बढ़ती ही जाती है। छोटी-

छोटी टाल टालियों में भी कितने पत्ते निकल आते

हैं। झाड़ तो बढ़ेगा ही। परन्तु उनकी आयु भी जरूर

है। कल्प वृक्ष की आयु कोई लाखों वर्ष थोड़ेही हो

सकती है। अभी बाप तुमको पढ़ा रहे हैं, पूज्य देवी-

देवता बनाने के लिए। पहले-पहले बाप तुमको ही

मिलता है और धर्म वाले तो आते ही पिछाड़ी में हैं।

चढ़ाओ नशा...

How lucky and Great we are...

ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा

28-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"I'm trying to free your mind, Neo. But I can only show you the door. You're the one that has to walk through it."
- Morpheus -

सतयुग में तुम आते हो। पढ़ाता भी तुमको हूँ। सिर्फ कहता हूँ पावन दुनिया में चलना है तो विकार में मत जाओ। फिर भी तुम मानते क्यों नहीं हो, विष बिगर

तुम रह नहीं सकते हो? मेरी मत पर नहीं चलेंगे तो

ऊंच पद भी नहीं पायेंगे। तुम्हारी आश ही थी

कृष्णपुरी में जाने की। तो श्रीकृष्ण की राजधानी में जायेंगे वा प्रजा में? श्रीकृष्ण के साथ खेल-पाल

प्रिन्स-प्रिन्सेज ही करेंगे। प्रजा थोड़ेही करेगी। यह

मम्मा बाबा भी पढ़ रहे हैं। तुम जानते हो यह राधे-

कृष्ण फिर स्वयंवर के बाद लक्ष्मी-नारायण बनेंगे।

राजाई वालों की ही माला बनती है ना। 8 दाने में

आओ, अच्छा 8 में नहीं तो 108 में तो आओ। कम

से कम 16108 में तो आओ। यह है ही राजयोग।

बाप की श्रीमत पर चलना चाहिए। घर के भातियों

को भी समझाओ। बाप तुमको समझाते हैं, औरों को

समझाने के लिए। पुरानी दुनिया का विनाश होना ही

है। महाभारत की लड़ाई भी प्रसिद्ध है जबकि

भगवान आया था। भगवान ने ही आकर राजयोग

सिखलाया था, स्वर्ग की स्थापना और नर्क का

विनाश हुआ, यह समय वही है। फिर राजधानी

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा



28-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

स्थापन हो जायेगी। सतयुग में दूसरा धर्म होता ही

नहीं। भारत कितना सिरताज था, कितना साहूकार

था, क्रिश्चियन लोग सब यहाँ से ही साहूकार हुए हैं।

सोमनाथ के मन्दिर से भी कितना माल ले गये, ऊंट

भरकर। यह तो एक मन्दिर की बात है। भारत में

बहुत मन्दिर थे। बाप सारे झाड़ का राज समझाते हैं।

मैं बीज ऊपर में हूँ। यह उल्टा झाड़ है ना।

नॉलेजफुल मैं हूँ। तुम मुझे पुकारते ही हो पतित-

पावन आओ। फिर भी कह देते नाम रूप से न्यारा

है। रावण ने सबको एकदम बेसमझ बना दिया है।

अब तुमको स्मृति आई है, हमारा बाप कौन है। यह

चक्र कैसे फिरता है। सबकी समझ तो एक नहीं

होती। एक की समझ न मिले दूसरे से। एक के

फीचर्स न मिले दूसरे से। तो अब तुम बच्चों को बाप

का बनना चाहिए ना। वह बाप भी है, टीचर भी तो

सतगुरु भी है। तुम जानते हो यह फी कुछ लेते नहीं

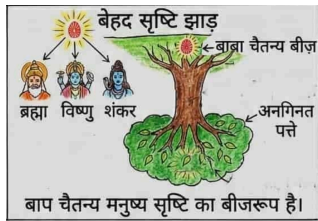
हैं। बिगर कौड़ी खर्चा तुमको 21 जन्मों के लिए

राजाई मिल जाती है। तुम भक्ति मार्ग में ईश्वर अर्थ

कुछ देते थे तो दूसरे जन्म में तुमको मिलता था।

अभी तो मैं डायरेक्ट आकर भारत को स्वर्ग बनाता

हूँ। इसमें जो कुछ खर्चा लगता है, वह बच्चों का ही



अथ पञ्चदशोऽध्यायः
श्रीभगवानुवाच
ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥
श्रीभगवान् बोले—आदिपुरुष परमेश्वरूप मूलवाले^१
और ब्रह्मारूप मुख्य शाखावाले^२ जिस संसाररूप
पीपलके वृक्षको अविनाशी^३ कहते हैं, तथा वेद
१. आदिपुरुष नारायण वासुदेवभगवान् ही नित्य और
अनन्त तथा सबके आधार होनेके कारण ऊर्ध्व नामसे कहे
गये हैं और वे मायापति, सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ही इस संसाररूप
वृक्षके कारण हैं, इसलिये इस संसार-वृक्षको 'ऊर्ध्वमूलवाला'
कहते हैं।
२. उस आदिपुरुष परमेश्वरसे उत्पत्तिवाला होनेके कारण तथा
नित्यधामसे नीचे ब्रह्मलोकमें वास करनेके कारण, हिरण्यगर्भरूप
ब्रह्माको परमेश्वरको अपेक्षा 'अधः' कहा है और वही इस संसारका
विस्तार करनेवाला होनेसे इसकी मुख्य शाखा है, इसलिये इस
संसारवृक्षको 'अधःशाखावाला' कहते हैं।
३. इस वृक्षका मूल कारण परमात्मा अविनाशी है तथा
अनादिकालसे इसकी परम्परा चली आती है, इसलिये इस
संसारवृक्षको 'अविनाशी' कहते हैं।
* अध्याय १५ * १११

जिसके पत्ते^१ कहे गये हैं—उस संसाररूप वृक्षको
जो पुरुष मूलसहित तत्त्वसे जानता है, वह वेदके
तात्पर्यको जाननेवाला है^२ ॥ १॥



Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा

लगता है। बच्चों को ही कहेंगे खर्चा करना है। इस

एक ब्रह्मा को अच्छी तरह पकड़ा खर्चा करने के लिए। इनमें प्रवेश कर इनसे सब कुछ कराया। यह

तो झट स्वाहा हो गया। सब कुछ जो इनके पास था,

सब दे दिया। बाबा बोले, बेगर बन जाओ तो फिर

ऐसा प्रिन्स बनाऊंगा, साक्षात्कार करा दिया। ख्याल

आया - अब यह क्या करेंगे। विनाश होना ही है।

बाबा ने कहा बन्दर मुआफिक मुट्टी बन्द नहीं करो,

खोल दो। झट खोल दी। नहीं तो इतने बच्चों का

खर्चा कैसे चलता। बच्चू बादशाह, पीरू वजीर यह

हो गया। एक को ही पैसे के लिए पकड़ लिया। तुम

बच्चों की भट्टी बननी थी। स्कूल भी बने थे। अभी

तुम होशियार हो फिर औरों को भी पढ़ाते हो। तुम

कितनों का कल्याण करते हो। बाप है ही

कल्याणकारी, सबको नर्क से निकाल स्वर्ग में ले

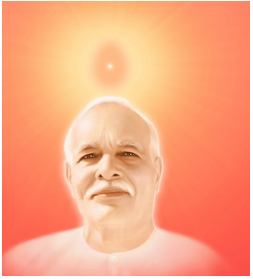
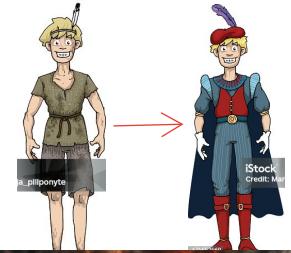
जाते हैं।



Simple Math..

अब जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे।

प्रजा के लिए भी प्रदर्शनियों आदि की युक्तियाँ और



Certain





28-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

भी निकलती रहेंगी। ढेर प्रजा बनती जायेगी। राजा-
रानी तो थोड़े होते हैं। प्रजा तो करोड़ों के अन्दाज में
होती है ना। किंग क्वीन तो एक है। वहाँ लड़ाई
झगड़ा आदि होता नहीं। बच्चे जानते हैं - अब तो



मौत सामने खड़ा है। जितना योग में रहेंगे उतना पाप
आत्मा से पुण्य आत्मा बनेंगे और कोई उपाय है

One & Only way

नहीं। सपूत बच्चे माँ-बाप को फालो करते हैं। बाप



पावन बने, बच्चा न बने तो वह कपूत बच्चा ठहरा

ना। इसमें तो नष्टोमोहा बनना होता है। मेरा तो एक

शिवबाबा दूसरा न कोई। वर्सा भी उनसे मिलेगा।

अब बाप से वर्सा पाना है नई दुनिया का, तो पतित

मत बनो। पावन बनने बिगर नई दुनिया में जा नहीं

सकेंगे। जन्म-जन्मान्तर के पाप किये हुए हैं, उनकी

सज़ा भोगनी पड़ती है। जैसेकि 63 जन्मों के पापों

की सजा मिलती है। गर्भजेल में भी सजा भोगते हैं।

सतयुग में कोई जेल आदि होती नहीं है। है ही स्वर्ग।

अब बाप साधारण तन में आये हैं, इसलिए बाप को

पहचानते नहीं हैं। बाप के साथ योग लगाने से ही

आत्मा पावन बनेगी। बाप कहते हैं मैं पतित दुनिया,

पतित शरीर में आता हूँ फिर इनको नम्बरवन पावन

बनाता हूँ। तत त्वम्। तुम भी पावन बनते हो। तुम

पावन तो बनना ही पड़ेगा
चाहे प्यार से (मीठे बाबा की श्रीमत पर चलके)..
चाहे मार से..

Choice is All yours

अवजाननि मां भूदा मानुषी तनुमाश्रितम्।
परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्॥
मेरे परमभावको न जानेवाले मुझलोग मनुष्यका
१. जिसके सम्पूर्ण कार्य कर्तृत्वभावके बिना अपने-आप
सत्त्वमात्रसे ही होते हैं, उसका नाम 'व्यवहारिक सद्गुरु' है।
२. गीता अध्याय ७ श्लोक २४ में देखना चाहिए।
१२० श्रीमद्भागवतम् अष्टमोऽध्यायः २४



Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा



28-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

बाप के बच्चे बने हो। प्रजापिता ब्रह्मा के भी बच्चे हो
इसलिए बापदादा कहा जाता है। बाप समझाते हैं

Take it Seriously..

अब टाइम बहुत थोड़ा है। शरीर पर भरोसा नहीं है।
बाप को याद करते रहो, स्वदर्शन चक्रधारी बनो।

सारा दिन यही बातें ख्याल में रहे। अच्छा!



दूसरों की गलतियों से
सीखो, अगर
अपने ही ऊपर प्रयोग करके
सीखने का प्रयास करोगे
तो आयु कम पड़ जाएगी।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा
का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की
रूहानी बच्चों को नमस्ते।

मीठी मुरली मेरे प्रियतम का प्रेम से भरा पत्र.



आपका शुक्रिया

मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा



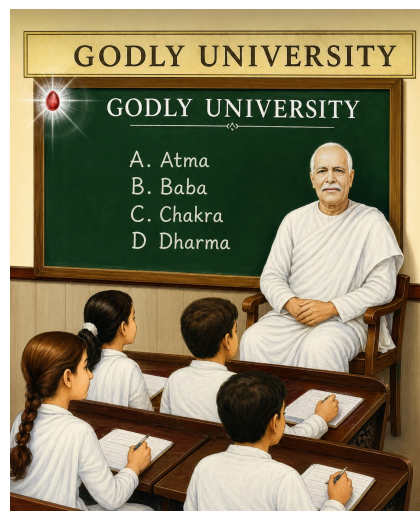
28-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन
धारणा के लिए मुख्य सार:-



1) पूरा-पूरा नष्टोमोहा बनना है। एक शिवबाबा दूसरा न कोई, यह पाठ पक्का करना है। सपूत बच्चा बन मात-पिता को फालो करना है।



2) बिगर कौड़ी खर्चे पढ़ाई से 21 जन्मों की राजाई मिलती है तो बहुत लगन से पढ़ाई पढ़नी है। स्वदर्शन चक्रधारी बनना है।



Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा



28-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- सदा अपने श्रेष्ठ भाग्य के नशे और खुशी में रहने वाले पदमापदम भाग्यशाली भव



सारे विश्व में जो भी धर्म पितायें वा जगद्गुरु कहलाने वाले बने हैं किसी को भी मात-पिता के सम्बन्ध से अलौकिक जन्म और पालना प्राप्त नहीं होती है। वे अलौकिक मात-पिता का अनुभव स्वप्न में भी नहीं कर सकते



और आप पदमापदमपति श्रेष्ठ आत्मायें हर रोज़ मात-पिता की वा सर्व सम्बन्धों की यादप्यार लेने के पात्र हो।



स्वयं सर्वशक्तिमान बाप आप बच्चों का सेवक बन हर कदम में साथ निभाता है तो इसी श्रेष्ठ भाग्य के नशे और खुशी में रहो।

स्लोगन:- तन और मन को सदा खुश रखने के लिए खुशी के ही समर्थ संकल्प करो।

इस जहां में है और न होगा
मुझसा कोई भी खुशनसीब
तुने मुझको दिल दिया है
मैं हूँ तेरे सबसे करीब



en = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धार



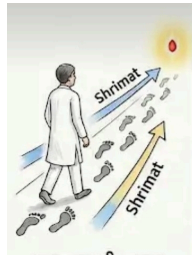
= सेवा

28-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति

ये अव्यक्त इशारे -

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन

अपकारी पर भी उपकार करो



बापदादा सदा श्रीमत देते हैं कि मन में हर आत्मा के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना रखो, अपकारी पर भी उपकार की वृत्ति रखो - यह है स्वच्छ मन।

Definition of

स्वयं के प्रति वा अन्य के प्रति व्यर्थ संकल्प आता है तो यह स्वच्छ मन नहीं है।

very Subtle Point to understand

Self checking

(only cash, not even negative)

स्वच्छ मन, क्लीन और क्लीयर बुद्धि हो तब डबल लाइट स्थिति बन सकेगी।

बाप समान स्थिति बनाने का यही सहज साधन है।

Short Cut



Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा

If you wish to stay connected, Here is the link



BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009

Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Sept 26

Click

All अव्यक्त इशारे Sept 26

Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place

Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

AV: 15/03/2010

Revise: 31/05/2026

Subtle Psychology

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है।

और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वतः ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है बाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026



अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य

12.3.2. रात को सोने की विधि और उससे फायदा:



(अ) बाबा कहते हैं लक्ष्मी-नारायण के चित्र के सामने जाकर बैठो। रात को भी बैठ सकते हो। इन लक्ष्मी-नारायण को देखते-देखते सो जाओ। “अहो! बाबा हमें ऐसा बनाते हैं!” तुम ऐसा अभ्यास करके देखो कितना मजा आता है! फिर सुबह को अपना अनुभव सुनाओ।



(आ) कई बार कहा है — रात को जब सोते हो, तो आधा घण्टा बाप की याद में बैठ जाना चाहिए। कम से कम आधा घण्टा याद में बैठो, फिर सवेरे उठ कर याद करो तो अवस्था अच्छी रहेगी। रात को बाबा की याद में बैठने का नियम रखो तो बहुत अच्छा है। योग में रहने वालों को बाबा मदद भी देते हैं। आपे ही आँखें खुल जायेंगी। खटिया हिल जायेगी। बाबा बहुतों को उठाते हैं। रात को बाबा की याद में सोयेंगे तो सुबह को बाबा आकर खटिया हिलायेंगे। ऐसा भी बहुत अनुभव लिखते हैं। हिम्मत बच्चे मदद बाप तो है ही। अपने ऊपर अटेन्शन रखो। बेहद का बाप कितना रहम करते हैं! बाप की मदद अनुभव करने के लिए मोस्ट बिलवेड बाप को बड़े प्यार से याद करना है।



(इ) बच्चे, यह भी कायदा है जास्ती खाने वाले को जास्ती नींद आयेगी। याद में रहेंगे तो खुशी में खाना भी बहुत थोड़ा खायेंगे। नींद भी बच्चों को टाइम पर करनी चाहिए।